शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं की आधुनिकता का समाजशास्त्रीय अध्ययन (इन्दौर शहर के विशेष संदर्भ में)

डॉ.सुशीला माहौर
प्राचार्य, शास.कन्या महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.)
सपना बड़ोले (शोधार्थी)
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र., भारत

शोध संक्षेप

वर्तमान समय में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनके परिवर्तित स्वरुप का अध्ययन करने की आवश्यकता है। यह देखने में आया है कि अभी तक अधिकांश अध्ययन महिलाओं की परिवर्तनशील आर्थिक स्थिति, विकास कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी तथा पारिवारिक एवं वैवाहिक समस्याओं से संबंधित रहे हैं। प्रस्तुत शोध कार्य भारतीय समाज के एक विशेष वर्ग की आधुनिकता के समाजशास्त्रीय विश्लेषण से संबंधित है। यह वर्ग है इन्दौर शहर की कामकाजी महिलाओं का। यह वर्ग भारतीय समाज का एक अंग है। आधुनिक शिक्षा और वैज्ञानिक प्रगति के कारण जीवन में जो परिवर्तन आये हैं, उनसे यहाँ की नारी निश्चित ही प्रभावित हुई है। यह कामकाजी वर्ग भारतीय महिलाओं के प्रगतिशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और भारतीय नारी के मुक्ति का प्रतीक भी है।

शब्द कुँजी - विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं की आधुनिकता

प्रस्तावना

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समाज भी इसी प्रकृति का अंग है। अतः समाज में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। परिवर्तन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है। हम ऐसे समाज की कल्पना नहीं कर सकते, जो स्थिर हो या अपरिवर्तनीय हो। परिवर्तन की अवधारणा में 'समय' का स्थान महत्वपूर्ण है अर्थात् परिवर्तन की गति समय-समय पर भिन्न होती है। मुगलकालीन भारतीय समाज में परिवर्तन की जो गति थी वह ब्रिटिशकाल में नहीं थी और भिन्नता आई।

भारत में सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में परंपरा पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण का विशेष महत्व है। परंपरा शब्द का संबंध अतीत काल से चले आ रहे व्यवहार और संस्थाओं से हैं, जबकि पश्चिमीकरण अर्थात् विदेशों में जन्मी और पनपी संस्कृति को स्वीकारना या ग्रहण करना है। आधुनिकीकरण समाज का सम्पूर्ण परिवर्तन है। आधुनिकीकरण कोई वस्तु नहीं है, जिसे खरीदा या बेचा जा सके या किसी को दिया या लिया जा सके। वास्तव में आधुनिकीकरण का संबंध मानसिक दृष्टिकोण से है।

आधुनिकीकरण नई प्रकार की व्यवहार प्रणालियाँ हैं, जिनके अंतर्गत परम्परागत मूल्यों में अभूतपूर्व परिवर्तन होता है। जब मूल्य परिवर्तित होंगे, संस्थागत व्यवस्थाएँ संशोधित होंगी, व्यक्तित्व खुला होगा तब इन सभी लक्षणों के संयोग से आधुनिकीकरण को बल मिलेगा।

आधुनिकीकरण की अवधारणा मूलतः परम्परा की अवधारणा के विपरीत है। जब एक समाज परम्परा को त्याग कर आधुनिकीकरण को अपनाता है, तब उसका विश्व के प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है।

परम्परागत विचारों के स्थान पर वह आधुनिक और नवीन ज्ञान, मूल्य एवं कला को महत्व प्रदान करने लगता है। सरकार के कार्यों एवं सत्ता के प्रति अलग दृष्टिकोण निर्मित होता है। व्यक्ति आर्थिक प्रगति के प्रति सजग होने लगता है। परिणामस्वरुप प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ने लगती है जिसका सीधा प्रभाव व्यक्ति के रहन-सहन, शिक्षा, सुख-सुविधाओं पर पड़ता है। आधुनिकीकरण के परिणामस्वरुप औद्योगिकरण को बढ़ावा मिलता है। संचार और यातायात की सुविधाओं में बढ़ोतरी होती है, नगरीकरण बढ़ता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1.शोध अध्ययन के कुछ प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं - जब नारी ने नौकरी के क्षेत्र में कदम रखा और आधुनिकता से सामना हुआ तब उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?

2.महिलायें किस गति से आधुनिकता की ओर अग्रसर हुईं हैं।

3.इन्होंने परम्परा और आधुनिकता में कितना सामंजस्य बनाये रखा, इस बात का पता लगाना।

पूर्व अध्ययन की समीक्षा

भारती गुप्ता ने विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं का आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन (1976) विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया, उन्होंने अपने अध्ययन में विभिन्न निजी, प्रशासकीय एवं अर्द्धशासकीय संस्थाओं में कार्यरत शिक्षित महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्थिति को जानना उनका उद्देश्य था तथा उनके शोध का यह निष्कर्ष सामने आया कि भारत वर्ष में लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या महिलाओं की है, जिन्हें उपभोग में तो पुरुषों के समान अधिकार है, किन्तु उत्पादन में उनका योगदान नहीं के बराबर है।

श्रीमती प्रीति सुमेरिया ने विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत इन्दौर शहर की महिलाओं की समस्याओं का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय विश्लेषण (2006) पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया। इनके शोध कार्य का उद्देश्य कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक, आर्थिक तथा कार्यक्षेत्र की समस्याओं का अध्ययन करना तथा इनके शोध कार्य का निष्कर्ष यह है कि विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं की पारिवारिक बच्चों के पालन-पोषण, कार्यक्षेत्र, व्यक्तित्व संबंधी भिन्नता, कार्यविधि तथा कार्य की प्रकृति की भिन्नताओं का उनकी पारिवारिक समस्याओं पर प्रभाव पड़ता है तथा इन्होंने अपने शोध कार्य के दौरान यह सुझाव भी दिया कि समय-सीमा एवं अन्य कठिनाइयों के कारण वर्तमान अध्ययन में छोड़े गए अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों को भविष्य में समाहित किया जा सकता है।

श्रीमती शैलबाला फारुकी ने अपना शोध कार्य 'इन्दौर नगर की शिक्षित कामकाजी महिलाओं में आधुनिकता का अध्ययन' इस विषय पर पूर्ण किया, जिनके शोध कार्य का उद्देश्य धर्म के नाम पर समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, कर्मकाण्डों और विकृतियों के संबंध में शिक्षित कामकाजी महिलाओं के स्पष्ट विचारों का अध्ययन करना तथा आधुनिकता के नाम पर पाश्चात्य संस्कृति के आधुनिकीकरण के संबंध में शिक्षित कामकाजी महिलाओं के विचार जानना था। निष्कर्ष यह है

कि शिक्षित कामकाजी महिलायें अपने रहन-सहन के तौर-तरीकों, आदतों में पर्याप्त परिवर्तन लाईं और इस क्षेत्र में आधुनिक दिशा की ओर बढ़ रही है।

उपकल्पना

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की दिशा निर्धारित करने के लिए कुछ प्रमुख उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है जो कि इस प्रकार हैं -

1.महिला जिस कार्यस्थल पर कार्य करती है उससे उसके रहन-सहन, खान-पान, पोशाक पर क्या प्रभाव पड़ता है।

2.कामकाजी महिलाओं को उनके पारम्परिक कार्य तथा उनके रीति-रिवाजों को निभाते हुए आधुनिकीकरण को अपनाने में समस्या होती है और उसका प्रभाव बच्चों व परिवार के लोगों पर पड़ता है।

3.उन कामकाजी महिलाओं के बच्चे सहपाठियों को तथा अपनी माँ (उत्तरदाता महिलाओं) के जीवन में परिवर्तन देख स्वयं भी यह उम्मीद रखते हैं कि वे भी नई चीजों को अपनाएं एवं इसी होड़ और लालसा की वजह से वे आपराधिक प्रवृत्ति की ओर कदम बढ़ाते हैं।

अध्ययन पद्धति

निदर्शन पद्धति की सहायता से इंदौर शहर में रहने वाली 400 विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं का चयन किया गया है। इसके लिए संस्तरित निदर्शन एवं समानुपातिक निदर्शन का उपयोग किया गया है। विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त जानकारी के आधार पर प्रत्येक वर्ग से दैव निदर्शन पद्धति के माध्यम से उत्तरदाताओं का चयन किया गया और निदर्शन के चुनाव में इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा गया हैं कि प्रत्येक ईकाई के चुनाव को समान अवसर प्राप्त हो।

निष्कर्ष

शोध कार्य के अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने निकलकर आता है कि आधुनिकता ने औद्यौगीकरण को बढ़ावा दिया है, स्त्री शिक्षा में वृद्धि हुई है महिलाएँ अब पुरूषों से किसी भी कार्य में पीछे नहीं है तथा यह भी पाया गया है कि अधिकतर महिलाएँ निजी संस्थाओं में कार्यरत हैं जिनमें शैक्षणिक संस्थाएँ ज्यादा है। अतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिकता ने न सिर्फ औद्यौगीकरण और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दिया है बल्कि पुरानी रूढिवादी परम्पराओं को पीछे छोड़कर महिलाओं ने सभी प्रकार के कार्यों को अपनी जीविका का साधन बना लिया है जिससे वे अपना भविष्य उज्जवल करने में सक्षम सिद्ध हुई है।

संदर्भ ग्रंथ

1.भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण - योगेन्द्र सिंह, रावत पब्लिकेशन-2011

2.आदिवासी विकास एवं गैर सरकारी संगठन - उदयसिंह राजपूत, रावत पब्लिकेशन-2010

3.भारत में सामाजिक परिवर्तन-डॉ. ओमप्रकाश जोशी, रिसर्च पब्लिकेशन्स त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-2006

4.दि पोजिशन आफ वर्किंग वूमन इन हिन्दू सिविलाइजेशन-डॉ. भल्तेकर, हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, 1956

5.भूमंडलीकरण में महिलाओं का श्रम-जया मेहता, दिशा संवाद, होशंगाबाद(म.प्र.)2000

6.भारतीय सामाजिक संस्थाएँ-रविन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 1992

7.भारतीय नारी: वर्तमान समस्यायें और भावी समाधान-डॉ.. आर.पी. तिवारी एवं डॉ.डी.पी. शुक्ला,

ए.पी.एच. पब्लिशिंग काॅर्पोरेशन, 5 अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 2002

8.कामकाजी महिलाएँ:- एक समाजशास्त्रीय विष्लेषण, लेखक-मंजू सिंह

9.भारतीय नारी - वर्तमान समस्याएँ और भावी नारी, लेखक - आर.पी. तिवारी एवं डी.पी. शुक्ला

10.भारतीय नारी - दशा और दिशा, लेखक - आशा रानी व्होरा।

11.सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी-रविन्द्रनाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, 2013

12.सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान-राम आहूजा, रावत पब्लिकेशन, सत्यम अपार्टमेंट, जवाहर नगर, जयपुर, 2011

13.सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी-देवेन्द्र पाल सिंह तोमर, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 2005